सद्गुणों के बिना कर्मकाण्ड व्यर्थ

सदगुण मनुष्य के सच्चे मित्र है। मनुष्य की महिमा तीनों त्रिलोक में केवल सदगुणों के कारण की जाती है। मनुष्य कितना भी कर्मकाण्ड कर अपने आप को अन्तर्मन में दिलासा दिलाकर संतुष्ट हो जाये परन्तु सदगुणों का जीवन में होना अति आवश्यक है क्योंकि सदगुण ही उसकी अपनी असली अखुट सम्पत्ति है। इस तरह एक कहानी है कि एक बार शिवरात्रि पर काशी के शिव मंदिर में भक्तों की भीड़ लगी थी। लोग पूजा का सामान लेकर मंदिर में दर्शन के लिए कतार में खड़े थे। पार्वती ने शिव से पूछा-क्या ये सभी लोग जो व्रत आदि कर रहे हैं, वे सब शिवलोक जाएंगे? शिवजी ने उत्तर दिया-नहीं। यह सुन पार्वती को आश्चर्य हुआ। शिवजी पार्वती को लेकर काशी के मंदिर पहुंचे। उन्होंने एक भिखारी दंपती का रूप धारण किया।

पार्वती एक भिखारिन के रूप में मदद की गुहार करते हुए कहने लगी-भगवान तुम्हारा भला करे, मेरे पति बीमार हैं, उन्हें थोड़ा पानी पिला दो। वहाँ सैकड़ों लोग उपस्थित थे लेकिन किसी ने भी उस बीमार को पानी नहीं दिया, जबकि हर कोई पानी का लोटा लिए कतार में खड़ा था। तभी एक किसान वहाँ आया, जो अत्यंत गरीब दिख रहा था। उसके कपड़े फटे पुराने थे। पूजा के सामान के नाम पर हाथों में कुछ फूल और पानी का लोटा भर था। महिला की पानी की गुहार सुनकर उसने अपने लोटे से भिखारी को जल पिलाना शुरू कर दिया। उस व्यक्ति की सरलता और करूणा को देखकर शिव ने उसे दर्शन देकर शिवलोक प्रदान किया। पार्वती ने शिवजी से पूछा - यह कैसे हुआ हर एक पूजा के लिए कतार में खड़े इतने ज्ञानी, पंडित मानवीयता दिखा न सके। वह एक निरे अनपढ़ व्यक्ति में सहज रूप से दिखी। शिवजी ने कहा - कतार में खड़े लोग मेरी पूजा के लिए नहीं अपनी मनोकामनाओं को पूर्ण करने के लिए आए थे। वे शिवलिंग पर जल चढ़ाकर अपनी इच्छा पूर्ण करने से अलग सोच ही नहीं सकते थे। वह किसान मेरे दर्शन के लिए सच्चे मन से आया था। उसकी नि:स्वार्थ भावना ही उसकी उपलब्धि का कारण बनी।

कहने का तात्पर्य है कि आज संसार में स्वार्थ का सागर अपने यौवन पर लहरा रहा है। यह स्वार्थ की लहर मनुष्य को एक हद की डोर में जकड़ चुका है। यह स्वार्थ मनुष्य का अच्छा बसा घर परिवार उजाड़ देता है, खूने नाहेक खेल खेलने पर मजबूर कर देता है, अपने को पराये कर देता है तथा यहाँ तक यदि मनुष्य कारणे-अकारणे ईश्वर की शरण में जाता भी है तो वह सदगुणों की आड़ में कर्मकाण्ड की चादर ओढ़ कर जाता है। परन्तु यह सत्यता से कोशों दूर होता है। सदगुणों के लिए कर्मकाण्ड की आवश्यकता नहीं है यह वैचारिक तथा मानसिक धरातल पर सदगुणों का उपजन से ही कर्मकाण्ड में वास्तविकता का आधार बनता है। मनुष्य को पूर्ण रूप से यह ज्ञान होना चाहिए कि जिस ईश्वर की शरण हम सदगुणों के नाम पर केवल कर्मकाण्ड का आडम्बर कर रहे है सारा संसार उनकी रचना है। यह कर्मकाण्ड की चादर की परीक्षा ईश्वर कभी भी ले सकता है और हम बेनकाब हो सकते है तथा ईश्वरीय प्राप्ति से वंचित हो जायेंगे।

संसार में आज धर्म और कर्मकाण्ड बढ़ने के बावजूद नैतिक मूल्यों से मनुष्य के दूर होने का मुख्य कारण यह भी है। जिस तरह से पानी के बिना नदी का, फल, फूल और छाया के बिना पेड़, डीजल के बिना गाड़ी और आत्मा के बिना शरीर अर्थहीन है उसी तरह से सदगुणों के बिना मनुष्य का जीवन भी अर्थहीन है। जो लोग सदगुणों से भरपूर होते है उन्हें कर्मकाण्ड और दिखावा की आवश्यकता नहीं होती है।

हम जितना भी दिखावा कर ले परन्तु हमारी पहिचान केवल दिखावा के रूप में ही होगी। हो सकता है कि इस मायावी संसार में कुछ समय के लिए आपके उपर वास्तविकता की धूल चढ़ जाये परन्तु समय आने पर वह असली स्वरूप में सामने आ जायेगी और आपको अपना जीवन ही नीरस लगने लगेगा।
कबीर दास जी ने ठीक ही कहा कि- माला फेरत युग भया, फिरा न मन का फेर। तनका, मनका डारि करका मनका फेर।।

मनुष्य सदियों से माला फेरता और कर्मकाण्ड करता आया परन्तु मन में सदगुणों का माला नहीं फिरा। जिन्होंने इस महत्व को समझ कर अपने कर्मकाण्ड को सदगुणों से पल्लवित किया उसका जीवन एक प्रकाश स्तम्भ है जिसके प्रकाश में लोग अपने भी जीवन को देखने का पुरूषार्थ करते है। आज सत्यता की खोज और स्वार्थों की पूर्ति के लिए लोग थके हारे, मांदे लाईट हाऊस परमात्मा के तरफ जाने की जिज्ञासा और पिपासा तो बढ़ रही है परन्तु अर्थहीन कर्मकाण्ड के कारण उनकी शक्ति क्षीण हो गयी है जिससे वे वहाँ तक पहुंचने में असमर्थ है। वे उस लाईट हाऊस को न देख पाने के कारण केवल एक दूसरे को ही देखने लग पड़े है जिससे दूसरों के अवगुण ही उनके अन्दर भरते जा रहे है और वह पतन की ओर तेजी से बढ़ रहा है तथा मानवीय मूल्यों से दूर होता जा रहा है। अब समय आ गया है कि हम कर्मकाण्ड को सदगुणों से युक्त करने के लिए मानव जगत में रहते मनुष्य की वास्तविकता को ही देखें तथा परमात्मा के बताये गये सहज मार्ग पर चलने के लिए अपने आपको परमात्मा के उपर अर्पण कर हर कर्म करे तो हमारे जीवन में होने वाले हर कर्म में सदगुणों की खुशबू होगी और हमारा जीवन तथा दूसरों का जीवन मानवीय मूल्यों से भरपूर होगा, उसके हर कर्म सुखदायी और परोपकारी होगें।

आज तक हुई पूजा, अराधना और कर्म काण्ड का सदियों से यही संदेश रहा है। परमात्म अवतरण का रहस्य और उनकी आवश्यकता सिर्फ इसके सही अर्थ को समझाना है तथा मनुष्य को मुक्ति, जीवनमुक्ति, वसुधैव कुटुम्बकम और एक धर्म, एक राज्य की स्थापना करना होता है। हर कर्म में एक श्रेष्ठ और मूल्यनिष्ठ जीवन का संदेश हो तभी मनुष्य का प्रत्येक कर्मकाण्ड अर्थहीन नहीं बल्कि विशेषताओं से भरपूर तथा दूसरों को शक्ति प्रदान करने वाला होगा। पूजा अराधना का मर्म जीवन में दया और करूणा जैसे सदगुणों के विकास में ही है। कामनाओं से प्रेरित कोरे कर्मकांड का कोई मूल्य नहीं। तो आईयें हम भी अपने कर्म को टटोलकर उसके सदगुणों का समावेश करें।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com